# इल्म जैसी जहां में है दौलत नहीं
# इल्म हासिल जहां हमको जाना वहीं

कमला भसीन

आप इल्म या ज्ञान को धन या दौलत मानती हो कि नहीं? या आप समझती हो कि सिर्फ़ सोना, चांदी, ज़मीन-जायदाद ही धन दौलत होते हैं?

मैं तो इल्म को दौलत मानती हूं और बहुत बड़ी दौलत मानती हूं। इल्म ऐसा धन है जिसकी मदद से दूसरा धन भी कमाया जा सकता है। आगे बढ़ने के लिए, कमाने और खाने के लिए इल्म या ज्ञान बहुत ज़रूरी है। अगर किसी में कोई भी ज्ञान न हो तो वह भला कैसे कमा कर खाएगी, कैसे अपना काम चलाएगी?

वैसे हर इंसान के पास कोई न कोई इल्म तो होता ही है। कुछ न कुछ तो हर औरत जानती है। जैसे हर औरत को घर का काम करना आता है, खाना पकाना, कपड़े सीना, बच्चों की देखभाल करना। इसके साथ-साथ बहुत सी औरतों को खेती करना आता है। कई औरतों को घरेलू दवाइयों का भी ज्ञान होता है। औरतों और मर्दों को कई और धंधे भी आते हैं जैसे बर्तन बनाना, चमड़े से चीज़ें बनाना, लकड़ी का काम, रस्सी बनाना, लोहे का काम करना आदि।

## नई ज़रूरतें

पहले तो जिंदगी के लिए ज़रूरी इल्म घरों और परिवारों में ही मिल जाता था। मां-बाप का धंधा बच्चे सीख लेते थे और उसी धंधे में लग जाते थे। लेकिन अब यह सब बदल रहा है।

कुछ पुराने धंधे तो धीरे-धीरे कम या खत्म होते जा रहे हैं। रबर और प्लास्टिक के जूते और चप्पलें चलने से चमड़े का काम कम हो गया। फैक्ट्री में नायलौन की रस्सियां बनने लगीं तो रस्सी बनाने का धंधा चौपट हो गया। कपड़ा फैक्ट्रियों में बनने लगा तो हाथ-करघे ठप्प हो गए।

ऐसी हालत में नये काम और नया ज्ञान पाना जरूरी हो गया है। घरेलू ज्ञान के भरोसे जीना अब मुश्किल हो गया है। घरेलू धंधों में सुधार करना ज़रूरी हो गया है। रोज़ कुछ नया ढूंढा जाता है, बनाया जाता है। इस नये ज्ञान के साथ अगर हम आगे न बढ़ें तो हम पीछे रह जाते हैं। और यही हो रहा है।

खाते-पीते घरों वाले और उनके बच्चे पढ़-लिख कर नया ज्ञान हासिल कर आगे बढ़ते जा रहे हैं। जो गरीब हैं, जिनके पास साधन नहीं हैं पढ़ने-लिखने के, नया ज्ञान पाने के वे और भी पिछड़ते

जा रहे हैं। अमीरों और गरीबों में अब फ़र्क सिर्फ़ पैसे या धन दौलत का नहीं है—फ़र्क ज्ञान का भी है। पैसे वालों ने इल्म की दौलत पर भी कब्ज़ा किया हुआ है।

औरत और मर्द में भी इल्म का फ़र्क रहा है। शुरू से ही औरत को नये ज्ञान से दूर रखा गया या वह स्वयं दूर रही क्योंकि उसे नया ज्ञान पाने का मौका ही नहीं दिया गया। अमीर घरों की औरतें भी इल्म से गरीब रहीं। मर्द नया सीख कर आगे बढ़ते रहे और अपनी शक्ति और अपना रौब और बढ़ाते रहे। औरत पिछड़ती गई, कमज़ोर और मोहताज होती गई।

## इल्म का हथियार

औरतों और गरीबों को अपनी मोहताजी और पिछड़ेपन से छुटकारा पाने के लिए इल्म का सहारा लेना होगा। ज्ञान की शक्ति से ही वे आगे बढ़ पाएंगे। इल्म को ही हथियार बनाना होगा—हथियार औरों को मारने के लिए नहीं—अपना अधिकार मांगने के लिए, जो उनके हक़ हथिया रहे हैं उन्हें रोकने के लिए। इल्म दौलत भी है और ताक़त भी। इल्म की दौलत सदियों से सिर्फ़ कुछ लोगों के हाथ में रही है और उन्होंने इल्म को हथियार बनाया हुआ है औरों को दबाने का। औरों पर धौंस जमाने का। इससे छुटकारा तभी होगा जब सभी पिछड़े वर्ग इल्म की दौलत हासिल करेंगे।

पहले तो ग़रीबों और औरतों को इल्म चुराना पड़ता था। उन्हें हक़ नहीं था पढ़ने-लिखने का, बंधन थे उन पर। कहा जाता था कि औरतों और नीची जाति वालों को पढ़ने-लिखने का अधिकार नहीं है। क्यों नहीं था अधिकार? क्योंकि ऊंची जात के ज्ञानी मर्द नहीं चाहते थे कि ज़्यादा लोग ज्ञानी और ताकतवर हों, इससे उन्हें खतरा था। उस ज़माने में गरीबों, नीची जाति वालों और औरतों को छिप कर इल्म हासिल करना पड़ता था।

एकलव्य की कहानी सुनी है न? वह एक होनहार बच्चा था, सीखने की लगन थी लेकिन आदिवासी था। इसीलिए गुरु द्रोणाचार्य ने एकलव्य को तीर चलाना सिखाने से मना कर दिया। गुरु जी सिर्फ़ राजकुमारों को शिक्षा देते थे।

एकलव्य ने इल्म पाने की लगन नहीं छोड़ी। वह निराश नहीं हुआ। उसने गुरु द्रोणाचार्य को गुरु मान कर अपने आप तीर चलाना सीखा। वह इतना अच्छा तीरंदाज बन गया कि पांडव पुत्रों को मात कर देता। गुरु भला यह कैसे सह सकते थे कि कोई आदिवासी बच्चा उनके राजकुमार शिष्यों का मुकाबला करे? यह तो खतरनाक था। ऐसा हो जाए तो ऊंची जाति वालों का बोलबाला खत्म हो जाए। तो गुरु जी ने क्या किया? अपनी और राजकुमारों की सत्ता बचाने के लिए एकलव्य से गुरु-दक्षिणा में उसका अंगूठा मांग लिया। अंगूठा नहीं होगा तो तीर नहीं चला पाएगा। एकलव्य ने अंगूठा दे दिया और अपनी शक्ति गंवा दी। तब उसके पास शायद कोई चारा नहीं था। अकेला वह पांडवों का मुकाबला नहीं कर सकता था।

इस कहानी से पता लगता है कि इल्म हर कोई पा सकता है लेकिन जो लोग सत्ता में हैं वे नहीं चाहते कि सब सीखें और आगे बढ़ें। लेकिन इल्म तो किसी की बपौती नहीं है। और इंसान होने का तो मतलब ही है इल्म पा कर आगे बढ़ना। हर इंसान का हक़ ही नहीं फ़र्ज़ भी है कि वह नया ज्ञान पाए, वह ज्ञान चाहे जहां से और चाहे जिस से मिले। कुरान शरीफ़ में तो यहां

तक लिखा है कि औरतों को इल्म पाने के लिए अगर दूर देश भी जाना पड़े तो जाना चाहिए। ख़ैर, अब तो कहीं दूर जाने की जरूरत नहीं है। जगह-जगह केन्द्र खुल रहे हैं, स्कूल खुल गए हैं। अगर लगन है तो रास्ते बहुत हैं।

इल्म पाने के लिए अब पढ़ना लिखना आना ज़रूरी हो गया है। अब सारा इल्म सिर्फ परिवारों से पाना मुमकिन नहीं है। नई जानकारी देने के लिए अगर आसपास लोग न हों तो किताबें, पत्रिकाएं पढ़कर ही नया ज्ञान पाया जा सकता है। आजकल साक्षरता जरूरी हो गई है इल्म हासिल करने के लिए।

### साक्षरों का फ़र्ज़

हम लोग जो साक्षर हैं उनका यह फ़र्ज़ है कि हम औरों को साक्षर बनाएं। अपने ज्ञान के दीप से दूसरों के दीप जलाएं। अगर हम यह मानते हैं कि इल्म दौलत है तो इस दौलत को हमें बांटना चाहिए, औरों तक पहुंचाना चाहिए। यही तो एक दौलत है जो जितना बांटो उतनी बढ़ती है। जो इल्म की दौलत औरों को देती है उसका इल्म और बढ़ता है। यानि जो इल्म बांटती है वह और दौलतवान बनती है। इस से बड़ा सौभाग्य और पुण्य क्या हो सकता है कि हम औरों को पढ़ना-लिखना सिखा सकें, उन्हें पांच-छः महीने में इस क़ाबिल बना सकें कि वे किताबें पढ़कर खुद नया ज्ञान, नया हुनर हासिल कर सकें।

इक दीप से इक और दीप जले
ज्ञान और साक्षरता फूले फले। □